B.A. (Hons) Part III
Philosophy Paper VI
Topic राजनीति दर्शन का स्वरूप

Dr. Sachidanand Prasad
Dept. of Philosophy
R.R.S. College, Mokama

राजनीति दर्शन भी सैद्धान्तिक है लेकिन राजनीतिशास्त्र से भिन्न है क्योंकि इसमें राज्य के विभिन्न पहलुओं का दार्शनिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। राजनीति दर्शन राजनीतिक जीवन का अर्थ तथा उद्देश्य से संबंधित है। यह राज्य के लक्ष्य, प्रयोजन तथा मूल्यों का अध्ययन है। राजनीति दर्शन के दो पक्ष निम्नलिखित है। रचनात्मक और समीक्षात्मक। राजनीति दर्शन के रचनात्मक पक्ष निम्नलिखित है।

(a) राजनीतिक चिन्तन का स्पष्टीकरण

(b) राजनीतिक अवधारणाओं में मूलगत आपत्तियों को दूर करना और समीक्षात्मक पक्ष है।

(c) राजनीतिक सिद्धांतों का मूल्यांकन।

(d) राजनीतिक आदेशों का सर्वेक्षण तथा

(2)

मूल्यांकन,

(c) राजनीति विज्ञान की प्रकृति की समीक्षा किस अर्थ में राजनीति विज्ञान को विज्ञान कहा जा सकता है। अपने समीक्षात्मक तथा रचनात्मक दोनों पक्षों के लिए राजनीति दर्शन को राजनीतिक तथ्यों की आवश्यकता होती है। राजनीतिक तथ्यों या सिद्धान्तों का अध्ययन राजनीतिशास्त्र में होता है इसलिए राजनीति दर्शन और राजनीतिशास्त्र एक दूसरे के पूरक हैं। राजनीति दर्शन का राजनीतिशास्त्र से भेद बतलाते हुए कुछ विद्वानों ने राजनीतिशास्त्र को वर्णनात्मक या यथार्थ विज्ञान कहा है और राजनीति दर्शन को आदर्श मूलक। राजनीतिशास्त्र में राजनीतिक तथ्यों का जैसा वे है अध्ययन किया जाता है लेकिन राजनीति दर्शन में आदर्शों के आधार पर ही उन तथ्यों का मूल्यांकन होता है। राजनीतिशास्त्र का इसलिए राजनीतिक तथ्यों के विश्लेषण से संबंध है पर राजनीति दर्शन का उनके मूल्यांकन से है। इस प्रकार इस आधार पर राजनीति दर्शन को आदर्शमूलक कहा जा सकता है। राजनीति दर्शन में सामान्य प्रत्ययों का स्पष्टीकरण, विश्लेषण, संश्लेषण तथा उनका विस्तार रहता है।